Total No. of Questions : **5**] [Total No. of Printed Pages : **4**

(1108)

UGC (CBCS) IIIrd Semester (New) Examination

1580

SANSKRIT

(Niti Sahitya)

(Core)

(Common with SKT-DSC-202-1st Semester)

SKT DSC-303

Time : 3 Hours] **[Maximum Marks : { Regular = 70, ICDEOL = 100**

नोट :– सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

खण्ड–क

1. (क) निम्नलिखित प्रश्नानमुत्तराणि एक पदेन लिखत–

   (i) नीति शतकस्य अर्थः कः ?

   (ii) पञ्चतन्त्रे कति तन्त्राणि सन्ति ?

   (iii) गगनमिव .... शुष्कमिव .... शमशानमिव रौद्रम्।

   (iv) चत्वारो ब्राह्मणाः कुत्र वसन्ति स्म ?

(v) उदार चरितानां कुटुम्बकम् किम् कथ्यते ?

(vi) वानरस्य मुखः कीदृशः आसीत् ?

(vii) मेघदूतम् केन विरचितम् ?

(viii) अभिज्ञानशाकुन्तलं नाटकस्य नायकः कः ?

(ix) किरातार्जुनीयम् महाकाव्यस्य रचयिता कः ?

(x) दशकुमार चरितम् केन विरचितम् ? 10×1=10

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए :

(i) वानर-मकर कथा का सार लिखिए।

(ii) इस संसार में रहते हुए मनुष्य को कौनसे कार्य नहीं करने चाहिए ?

(iii) पंचतंत्र पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

(iv) नीतिशतक के अनुसार कौनसे मनुष्य मर्त्यलोक में भारभूत होते हैं ?

(v) नीतिशतक का परिचय संक्षेप में लिखिए।

5×4=20(30)

खण्ड–ख

2. किसी **एक** भाग का सरलार्थ कीजिए :

(i) व्याधितेन सशोकेन चिन्ताग्रस्तेन जन्तुना।
कामार्तेनाऽथ मत्तेन दृष्टः स्वप्नः निरर्थकः॥

(ii) अज्ञः सुखमाराध्य सुखतरमाराध्यतै विशेषज्ञः।
ज्ञानलवदुर्विदग्धं ब्रह्माऽपि तं नरं न रञ्जयति॥

अथवा

(i) दूरमार्गश्रमश्रान्तं वैश्वदेवान्तमागतम्।

अतिथिं पूजयेत् यस्तु स याति परमां गतिम्॥

(ii) बोद्धारो मत्सर ग्रस्ताः प्रभवः स्मय दूषितः।

अबोधोपहताश्चान्ये जीर्णमङ्गे सुभाषितम्॥ 2×5=10(15)

खण्ड–ग

3. किन्हीं दो सूक्तियों की प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए :

(i) अर्धं त्यजति पण्डितः।

(ii) जीर्यन्ते जीर्यतः केशाः।

(iii) लभेत सिकतासु तैलम्।

(iv) अरक्षितं तिष्ठिति दैवरक्षितम्। 2×5=10(15)

खण्ड–घ

4. निम्नलिखित गद्यांशों की प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए :

(i) नापितोऽपि स्वगृहं गत्वा व्यचिन्तयत्-नूनमेते सर्वेऽपि नग्नकाः शिरसि दण्डहताः कांचनमया भवन्ति।

तदहमपि प्रातः प्रभूतानाहूय लगुडैः शिरसि निहन्मि, येन प्रभूत हाटकं मे भवति। एवं चिन्तयतो महता कष्टेन निशा व्यतिचक्राम्।

(ii) तत् यदि मया भार्यया ते प्रयोजनं ततः तस्य हृदयं मह्यं प्रयच्छ, येन तद्भक्षयित्वा जरा-मरण रहिता त्वया सह भोगान् भुनज्मि। स आह–"भद्रे। मा मा एवं वद। यतः स प्रतिपन्नोऽस्माकं भ्राता, अपरं फलदाता, ततो व्यापादयितुं न शक्यते, तत् त्यजतु एनं मिथ्याग्रहम्। 2×5=10(15)

खण्ड–ङ

5. किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

(i) कालिदास का जीवनवृत्त लिखिए।

(ii) 'भारवेरर्थगौरवम्' उक्ति के आशय को विस्तार से स्पष्ट कीजिए।

(iii) बाणभट्ट की रचनाओं का विवरण लिखिए।

(iv) मेघदूत पर टिप्पणी लिखिए। 2×5=10(15)